PUNE RESEARCH WORLD ISSN 2455-359X
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF INTERDISCIPLINARY STUDIES VOL I, ISSUE 4

'शुतुरमुर्ग' नाटक के पात्र वर्तमान राजनीती के दर्शन

प्रा. डॉ. विजया जगन्नाथ पिंजरी - शिंदे
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय,
पाचवड ता. वाई, जि. साजारा
महाराष्ट्र (भारत)

हिंदी नाटक को नवीन दिषाओं, प्रयोगधर्मिता, षिल्पगत नवीनता की ओर अग्रसर करने में ज्ञानदेव अग्निहोत्री का स्थान महत्वपूर्ण है। टेकनीक का नयापन, नई संवेदना इनके नाटकों की पहचान है। नाटककार एवं रंगकर्मी के रूप में सक्रिय रहते हुए उन्होंने हिंदी नाटक को जहॉ अपनी नाटय कृतियों व्दारा समृध्द किया है, वही उसमें नवीन प्रयोगषील वृत्ति और रचनात्मक तत्व भी जोडे। हिंदी नाटक को समसामायिक व्यंग्य, मानव जीवन के आधुनिक प्रष्नों की ओर ले जाने में ज्ञानदेव अग्निहोत्री ने सार्थक पहल की।

ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटकों का परिचय

'नेफा की एक शाम' 1963, 'माटी जागी रे' 1964, 'वतन की आबरू' 1965, 'चिराग जल उठा' 1966, 'शुतुरमुर्ग' 1968, 'अनुष्ठान' 1972, 'दंगा' 1984, 'इतवार जिंदाबाद', 'एकांकी संकलन' 1967

'नेफा की एक शाम' ज्ञानदेव अग्निहोत्री का पहला नाटक भारतभर अपार लोकप्रिय हुआ । यह नाटक भारत–चीन संघर्ष पर आधारित है। 'माटी जागी रे' को प्रचारात्मक नाटक कहा जा सकता है। इस नाटक में ग्रामीण समस्याओं के संदर्भ में उनके जीवन में जनचेतना लाने का प्रयास किया है। 'वतन की आबरू' भारत–पाक संघर्ष पर आधारित नाटक है। इसका कथानक जेहाद और मजहब की झूठी नकाबे लगाकर हमला करनेवाले नापाक आक्रमणकारियों की काली करतूतों पर आधारित है। 'शुतुरमुर्ग' नाटक जीवन के कटु सत्यों से पलायन करनेवाली मानवी वृत्ति का परिचायक है। 'दंगा' में हिंदू–मुस्लिम संप्रदायों को राष्ट्रीय एकता का संदेष दिया गया है।

रंगमंच पर सभी नाटकों को सफालता मिली है।

शुतुरमुर्ग नाटक का परिचय –

ज्ञानदेव अग्निहोत्री का 'शुतुरमुर्ग' व्यंग्य रचना के साथ जीवन के कटु सत्यों से पलायन करनेवालों का चित्रण करनेवाला अव्दितीय नाटक है। शतुरमुर्ग प्रतीक है हमारे उस राजनीतिक भावबोध का जहॉ निर्णय लेनेवाला राजनेता स्थिति आने पर शुतुरमुर्ग की तरह अपनी गर्दन अंधविष्वास के बालू में गढा लेता है। नाटककार ने प्रतीकात्मकता और व्यंग का आश्रय लेकर स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीतिक, सामाजिक परिस्थितीयों तथा इस शोषण में पीसते साधारण जनता की स्थिति को प्रभावशाली ढंग से प्रयुक्त किया है।

शुतुरमुर्ग नाटक में आज की राजनीति के उसी स्वरूप पर व्यंग्य किया गया है। जहॉ बडी बडी योजनाएँ है, आष्वासन और झूठे वादे है, झूठी उम्मदें, निर्माण के दिखावे है, समस्याओं का अध्ययन भी जहॉ बनावटी और राजनीतिक षडयंत्र का एक भाग है, झूठी शक्ति का दिखावा अैर जनता की जिंदगी के साथ खिलवाड है। इसे प्रस्तुत करने के लिए शुतुरमुर्ग में एक ऐसे राजा और नगरी का कथानक चुना गया है जो सब जगह मौजूद है। राजा सत्य से मुॅह छिपाता है, पलायन करता है। यह जानते हुए भी उसकी नगरी छूठी है, नगरी का प्रतीक भी झूठा है फिर भी वह उसे देखना पहचानता नहीं चाहता और सभी शक्तियों–तत्वों को उस पर केंद्रित रखता है। उसकी नगरी शुतुरमुर्ग है और शुतुरमुर्ग उसका राजचिन्ह है और वह सुरक्षित नहीं है। इस तथ्य को नाटककार ने आरंभ में ही सुत्रधार के व्दारा संबोधित किया है।

अपनी समसामायिकता, प्रतीकात्मकता और प्रयोगात्मकता में ज्ञानदेव अग्निहोत्री का प्रथम सार्थक नाटक और हिंदी में एक उल्लेखनीय प्रयास 'शुतुरमुर्ग' को अवष्य कहा गया सकता है।

शुतुरमुर्ग नाटक की कथावस्तु :–

ज्ञानदेव अग्निहोत्री का 'शुतुरमुर्ग' नाटक देष की राजनितीक गतिविधियों पर एक करारा व्यंग्य है। नाटक की कथावस्तु के केंद्र में मानव स्वभाव में व्याप्त शुतुरमुर्ग प्रवृत्तियों का दर्षन होता है।

शुतुरमुर्ग की एक विशेष प्रवृत्ति है, जो उसे भ्रम में डाल देती है। शुतुरमुर्ग जब अपने आपको किसीं न किसी कारण असुरक्षित पाता है तब वह ऑखो समेत अपनी चोंच रेत में डूबो देता है और पलायन की उस संपुर्ण अनुभूति में यह कल्पना करता है कि उसे कोई नहीं देख रहा है, उसे कोई नहीं जान रहा है और वह सुरक्षित है। शुतुरमुर्ग का राजा केवल शुतुरमुर्ग जैसी प्रवृत्ती का नहीं बल्कि वह सचेतन शुतुरमुर्ग है। इस प्रवृत्ती को नाटककार नें निरंतर जनजीवन को छलनेवाले सत्ताधारियों की आत्मप्रवंचित मनोवृत्ति से जोडा है। प्रस्तुत नाटक का प्रधान पात्र राजा सचेतन शुतुरमुर्ग है। सचेतन शुतुरमुर्ग अच्छी

तरह जानता है कि उसे सब देख रहे है, सब समझ रहे है, सब जान रहे है और वह सुरक्षित नहीं है।

शुतुरनगरी का राजा स्वयं को सचेत और चतुर मानते हुए सत्ता सुरक्षा के लिए शुतुर प्रतिमा के निर्माण तथा उस पर स्वर्णछत्र की स्थापना के महान कार्य में जुड गया है। लगभग बीस वर्षों से यह काम जारी है। राजा शतुरमुर्ग के निर्माण और सुवर्णछत्र के निर्माण का बहाना बनाकर जनता से धन, रूपये, पैसे, सुवर्णमुद्राएँ हडप कर लेना है 20 साल तक वह नहीं बन पाता क्योंकी वह केवल कल्पना मात्र होती है जब नगरी में भूखमखी छॉ जाती है। लोग बेहाल हो जाते है। तब भी राजा शुतुरनगरी में रक्तवंषी और रक्तबीज भी सेनाओं के आक्रमण की बात उठाकर राजा लोगों से खुद की और नगरी के रक्षा की बात उठाता है। भूखमरी की समस्या को हल करने के लिए राणी के द्वारा एक समिती गठित करता है राजा भूक को एक शारीरिक स्थिति नहीं बल्कि मनस्थिती मान लेते है।

जब सारी स्थिति मर्यादा को पार कर जाती है तो मंत्रीगण राजा को धमकाते है। आप शुतुरमुर्ग तोडने की आज्ञी नहीं देंगे तो हम उनका साथ छोड देंगे। राता चिंतित हो जाता है। भयभित हो जाता है। पागलसा अट्टहास करणे लगता है और सभी लोगों की शरण में आ जाता है, कहता है "हमे भीड की शरण में ले चलो, जैसा भीड कहेगी हम वैसाही करेंगे। शुतुरमुर्ग तोडना यानी शुतुरमुर्ग की सही कल्पना क्या थी यह बात जनता के सामने आ जाती है की यह बात यानी असल में सब धोका है और राजा की पोल सभी लोगों के सामने खुल जाती है। " [1] (पृ.–4)

नाटक में हर पात्र राजनैतिक विशेषताओं से युक्त है नाटक वर्तमान राजनिति को दर्षाने वाला है। राजनिती के समस्या को उठाना और उसे पूरी इमानदारी से प्रस्तुत करता नाटक का उददेष रहा है नाटक के पात्र और चरित्र इस प्रकार रहे है।

'शुतुरमुर्ग' नाटक के पात्र एवं चरित्र–चित्रण :–

ज्ञानदेव अग्निहोत्री का 'शतुरमुर्ग' यह एक ऐसा नाटक है, जिसमें अनेक पात्रों की प्रधानता है। राजा, विरोधीलाल और महामंत्री नाटक के प्रधान पात्र हैं तो रक्षामंत्री, भाषणमंत्री, मामुलीराम, दासी, रानी, मरा हुआ मनुष्य आदि गौण पात्र है।

नाटक के सभी पात्र समसामायिक राजनीतिक व्यंग्य से संबंधित है।

1) राजा :–

शुतुरमुर्ग का नाटक राजा एक आधुनिक पात्र है जो अपनी भूमिका द्वारा समकालीन राजनेता के स्वरूप का उद्घाटन ही नहीं करता अपितु उसका सही प्रतिनिधित्व

भी करता है। शुतुरमुर्ग नाटक का राजा प्रधान पात्र है । नायक राजा राजनीतिक सत्ता के कपटपूर्ण आडंबर और उसके भीतर खोकलेपन, जडता, स्वार्थ परायणता आदि को व्यक्त करता है। अपनी भूमिका वह बखूबी निभाता है ताकि अपने साथ–साथ दर्षकों को पूर्ण मोहभंग की स्थिति तक ले जा सके । अतः सूत्रधार की भूमिका के रूप में दर्शकों के सामने आते ही है।

राजा सचेत शुतुरमुर्ग :

इस नाटक का राजा मुख्य पात्र है। वह अपनी शक्ति और सत्ता को सुरक्षित रखने के लिए सोने के शुतुरमुर्ग की प्रतिमा के निर्माण और स्वर्णछत्र की स्थापना का कार्य आरंभ करता है। वह जनता को अंधकार में रखकर यह कार्य करता है। उसकी धारणा है कि, मेरे सोने का शुतुरमुर्ग एक दिन विषालकाय रूप धारण कर लेगा। इतिहास पुरूष की तरह उसका महाकाय, मंगल व्यक्तित्व आकाषगंगा तक उॅचा उठ जाएगा । वही–वही होगा मेरे जीवन की संपुर्ण सार्थकता का क्षण।

चतुर और कुटिल नेतृत्व :

शुतुरमुर्ग नाटक का मुख्य पात्र राजा कुटिल है। विरोधीलाल जनता का प्रतिनिधित्व करता है। उसे शुतुरमुर्ग की प्रतिमा का निर्माण उस पर स्वर्ण–छत्र की योजना का तिरस्कार है। इस प्रतिमा निर्माण में काफी भ्रष्टाचार होने के कारण विरोधीलाल के तेवर उग्र है। विरोधीलाल राजा को मिलने आता है। विरोधीलाल की कठोर बाते राजा शांत ढंग से सुनता है और उसे एकांत में बुलाकर विरोधीलाल को अपने मंत्रिमंडल में मंत्रीपद देकर उसका विरोध बंद करता है। इतना ही नहीं वह विरोधीलाल का नाम बदलकर सुबोधीलाल कर देता है। राजा विरोधीलाल में व्याप्त शुतुरमुर्ग प्रवृत्ति का लाभ उठाकर अपना रास्ता साफ कर देता है।

धोखेबाज :

राजा अपने साथ मंत्रिगण, जनता, विरोधी गुट के नेता, रानी, दासी सभी के साथ धोका करता है। बीस साल तक शुतुरमुर्ग प्रतिमा और स्वर्णछात्र के निर्माण की योजना द्वारा जनता को धोखा देता है। विरोधी पक्ष के लोगों को लालच दिखाकर, उनके साथ साम–दाम–दंड की नीति से धोखाधडी करता है। विरोधीलाल को मामुलीराम के सामने, दोनों को जनता के सामने नंगा करके एक प्रकार से विरोधीलाल और मामुलीराम को धोखा देता है। रानी को भूखबलि की परिभाषा बदलवाने के लिए दासी को अकाल, भूख की पीडा से अनभिज्ञ होने का बहाना बनाकर धोखा देता हैं

अवसरवादी :

राजा जब जब संकट में आता है तब 'सत्यमेव जयते' का भावूक नारा लगाकर सभी को गुमराह करता है। जनता को विदेषी आक्रमण का भय दिखाकर, राष्ट्र को एकता के नाम संदेष प्रसारण करता है। राज्य में हो रहे भूखबलि के लिए रानी के नेतृत्व में समिती का गठन करके अपनी इच्छा के मुताबिक रिपोर्ट करके भूखबिल जनता के साथ खिलवाड करता है। मंत्रियों के भ्रष्ट व्यवहार की ओर ध्यान नहीं देता। अपनी कुर्सी की रक्षा के लिए मंत्रियों को भ्रष्ट्राचार की छूट देता है उन्हें ही स्वर्णमुद्रांकऍ बॉट देता है।

पलायनवादी :

राजा हमेषा सत्य से मुॅह छिपाता है, पलायन करता है। यह जानते हुए भी कि उसकि नगरी झूटी है, नगरी का प्रतीक भी झूठा है फिर भी वह उसे देखता पहचानना नहीं चाहता और सभी शक्तियों–तत्वों को उसपर केंद्रित रखता है। उसकी नगरी शुतुरमुर्ग उसका राज्य चिन्ह है और वह स्वयं सचेतन शुतुरमुर्ग है जो अच्छी तरह जानता है उसे सब देख रहे है।, सब जान रहें और वह सुरक्षित नहीं है। इस तथ्य को नाटककार ने आरंभ में ही सूत्रधार के व्दारा संकेतिक कर दिया है।

2) विरोधीलाल :–

शुतुरनगरी के राजा नीतियों के घोर विरोधी पात्र के रूप में विरोधीलाल की प्रारंभिक भूमिका में अवतिर्ण है। वह जनता का प्रतिनिधित्व करता है। वह भीड का अंग बन जाता है। उसके पास वाणी की प्रखरता है। वाणी के माध्यम से वह जनता की आवाज बनकर राजा के दरबार में प्रवेष करता है। अंत में वह राजा का समर्थक बन जाता है।

शुतुरनगरी के राजा के नीतियों का घोर विरोधी :

उसकी वाणी तेज है, संमोहित है। एक ओर जनता रोटी, कपडा और मकान के लिए तरस रही है और दूसरी ओर राजा झूठी योजनाऍ, भ्रष्टाचार में लिप्त है। राजा के विरोध में वह उग्र प्रदर्षन करता है, जनता विरोधीलाल के साथ है। राजा के लिए, मंत्रिगण के लिए वह समस्या बन गया है।

स्पष्टवादी :

राजा और विरोधीलाल पहली बार एक दूसरे के सामने आ जाते तो विरोधीलाल साहसिकता का परिचय देता है। वह राजा से व्यंग्य भरे प्रष्न पूछता है। वह राजा पर आरोप करता है कि, "जीवन की विषम समस्याऍ शुतुरनगरी को पीस रही है।" [2] (पृष्ठ 21) राजा को वह खुलकर गालियॉ देता है।

सिध्दांतहीन अवसरवादी दलबदलू नेता :

विरोधीलाल शुतुरमुर्गी शासन तंत्र का विरोधी बनकर सामने आता है किंतु शीघ्र ही विकासमंत्री बनने के प्रलोभन में अपनी वाणी ही नहीं आत्मा को भी बेच देता है। विरोधीलाल सिध्दांतहीन अवसरवादी दलबदलू राजनीतियों का प्रतीक है जो शासनतंत्र का अंग बनने से पूर्व तो जनहित का जामा पहनकर जनता के सच्चे प्रतिनिधी व हितैषी बनने का दंभ भरते है किंतु जो ही शासनतंत्र द्वारा उनके सम्मुख चंद चॉदी के टुकडे फेंक दिए जाते है, त्यों ही वे अपनी वाणी व आत्मा को बेचकर शासनतंत्र का क्रीतदास बन जाते है। नाटककार ने विरोधी दलों में भी व्याप्त शुतुरमुर्ग प्रवृत्ति का विरोधीलाल के चरित्र के माध्यम से परिचय दिया है।

धोखेबाज :

विरोधीलाल का मंत्री होना तय हो जाने के बाद वह जनता और मामुलीराम से धोका करता है। जब मामुलीराम विरोधीलाल से पुछता है कि राजा ने उनकी मॉगे मान ली तो विरोधीलाल उसे झुठ कहता है कि "अब एक–एक कर के सब कष्ट दुर हो जायेंगे। रोटी, कपडा और मकान सब कुछ मिलेगा, दूध घी की नदियॉ बहेंगी"। [3] (पृष्ठ क्र. 31)

क्रीतदास :

विरोधीलाल जब राजा द्वारा उसका नाम ही बदलकर सुबोधीलाल करता है तो उसे वह स्वीकार करता है। तब महामंत्री कह देता है, ''मैं तो मन, वचन और कर्म तीनों से महाराज का अनुनायी रहना चाहता हुॅ। अब मेरे पास आत्मा जैसी कोई चीज नही है। अब मैं पूर्ण रुप से महाराज का अनुयायी रहूॅगा।

स्वार्थी :

मंत्रीगण के सभी मंत्री जब अपने आपको बचाने का अंतिम प्रयास करने के रुप में विरोधीलाल के द्वारा शुतुरमुर्ग को तोडने की योजना का एलान राजा के सामने कर देते है। उस वक्त विरोधीलाल राजा का पक्ष छोडकर महामंत्री का पक्षधर हो जाता है। तभी विरोधीलाल के भीतर होनेवाले स्वार्थी वृत्ति के दर्षन होते है।

3) मामुलीराम :–

मामुलीराम साधारण तथा शुतुरनगरी की शासन व्यवस्था में जागृत जनता का प्रतीक है। वह अपने क्रियाकलापों के द्वारा जनभावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें किसी भी कीमत पर दबाया नही जा सकता। मामुलीराम पात्र विषेष न होकर 'सामुहिक भावनाओं का प्रतीक' है पूरी जनता को प्रस्तुत करनेवाला। उसमें विद्रोह है, मॉगे है, शक्ति है, भीड का समर्थन सहयोग है।

भीड का दुसरा अंग :

शुतुरमुर्ग नाटक में विरोधीलाल और मामुलीराम भीड के अंग बन कर आ जाते है। जब विरोधीलाल सुबोधीलाल बनकर विकासमंत्री का स्थान ग्रहण करता है तो मामुलीराम जनता का प्रतिनिधि बनकर सामने आ जाता है। मामुलीराम विरोधीलाल की बातों पर पहले विष्वास करता है। विरोधीलाल के द्वारा मामुलीराम को जनता की रोटी, कपडा और मकान के बातों की पूर्ती का आष्वासन मिलता है तब वह ये बाते जनता को सुनाने में उतावला हो जाता है। विरोधीलाल उसे अपना उत्तराधिकारी के रुप में नियुक्त करता है।

भीड का समर्थन और सहयोग प्राप्त नेता :

जनता के मॉगो की पूर्ती न होते देख मामुलीराम राजा के दरबार में उपस्थित हो जाता है। विरोधीलाल के द्वारा उपस्थित शुतुरमुर्ग तोडने की योजना का मामुलीराम को पता चलता है। तब मामुलीराम राजा को ललकारता है कि, ''शुतुरमुर्ग तोडने का तो प्रष्न ही नही उठता, सोने का शुतुरमुर्ग तो कभी बना ही नहीं। आपके मंत्रियों ने आपके साथ बडा छल किया है। असली शुतुरमुर्ग तो आप है, जो हमें खाकर और हमें पीकर अपने आपको बनाते रहें।'' [4] (पृ.67) भीड का समर्थन पाकर मामुलीराम सशक्त हो गया है। वह राजा पर अविष्वास दिखाकर उसे महामूर्ख घोषित कर देता है। अति आत्मविष्वास में वह संकट मे आ जाता है। जब शुतुरमुर्ग न बनने की असली बात मामुलीराम प्रकट करता है तो सभी मंत्रीगण एक होकर राजा और मामुलीराम को नारपाष में बॉध देते है।

4) महामंत्री :–

अपना उल्लू सीधा करने के लिए सत्ता का उपयोग करता है। परम सत्यवादी महामंत्री के शब्दों में 'तुक भरी बेतुकी बाते, आदर्षहीन आदर्ष और तर्कहीन तर्को का सत्य' राजा के चरित्र की विषेषताएँ है। जिनके बल पर वह प्रायः सभी संघर्ष और विद्रोह को शांत करने का प्रयास करता है। कटु सत्यों की खुलेआम चर्चा कर राजा से आधिकाधिक स्वर्णमुद्रायें हासिल करनेवाले अंत में मंत्रिगणों की सहायता से राजाको सत्ता से निष्कासित कर स्वयं राजा बननेवाले चालबाज राजनितिक नेता के रुप में महामंत्री का चरित्र सामने आ जाता है।

कटु सत्य को बार बर प्रकट करनेवाला नेता :

जब विरोधीलाल का परिचय राजा के नीतियों का विरोधक रुप में कर दिया जाता है तो तुरंत महामंत्री अपने लहज में कह देता है, 'जो कुछ कहॅगा सच कहुॅगा सच कहुॅगा, महाराज की सिर्फ एक निती है (विराम) कि इनकी कोई निती नही।'' इस व्यंगभरे वक्तव्य से राजा का चरित्र स्पष्ट हो जाता है। विरोधीलाल की आवाज बंद कर देने की बहस में

महामंत्री कह देता है कि, "उसकी आवाज बंद करने का प्रयास मत किजिए फिर तो आप सत्य का गला ही घोट देंगे"। [5] (पृ.9)

राजा विरोधीलाल को मिलना नही चाहता पर महामंत्री फटकारते हुए कह देता है कि, 'आपको विरोधीलाल से जरुर मिलना चाहिए। आप भयभीत है तभी तो आप सत्य से साक्षात्कार नहीं करना चाहते। हमारी शुतुरनगरी में केवल एक सत्य है, वह यह कि सजग और संवदेनषील होकर जीना संभव नहीं है।'

स्वार्थी, चालबाज, व्यावहारिक चरित्र :

राजा, भाषणमंत्री और विरोधीलाल की चर्चा मे वह चुप बैठता है। भाषणमंत्री शुतुरमुर्ग के निर्माण कार्य को पूरा होने की बात कह देता है तो भावावेष में आकर राजा शुतुरमुर्ग के उद्घाटन प्रबंध महामंत्री जी को सौपतें है और इस कार्य के लिए एक सहस्त्र स्वर्णमुद्राएँ स्वीकृत करते है। महामंत्री इस प्रस्ताव को निरपेक्ष भाव में स्वीकारते है।

राजा जब जनता में व्याप्त असंतोष को दबाने के लिए दबावतंत्र के रुप में बाहय आक्रमण का माहौल तैयार करने की काषिष करता है तो महामंत्री स्पष्ट रुप से कह देता है कि, देष में युद्धोन्माद उत्पन्न करना ठीक नही है महाराज। तब वह राजा के सूर में सूर जरुर मिलाता है पर सूचक विरोध भी दर्षाता है।

सत्ता पाने का दावेदार :

महामंत्री अवसर की तलाष में है। जब वह महसूस करता है कि राजा चारों ओर से घेर लिया गया तो वह अपनी चाल चलने लगता है। महाराज और मामुलीराम को दरकिनार करता है तो शुतुरमुर्ग को तोडने की वह योजना बनाता है। महामंत्री राजा के शुभ जन्मोत्सव पर उसे सत्ता से निष्काषित करके स्वयं सत्ता की बागडौर सँभालता है।

5. रक्षामंत्री :–

राजा के मंत्रिगंणों में से एक मंत्री है। राजा को जनता में व्याप्त आक्रोष का परिचय देने का काम करता है। रक्षामंत्री तो है पर राजमहल की भी ठीक ढंग से सुरक्षा रखने में असफल रहता है। वह निष्क्रिय है। वह विरोधीलाल के गुणों से प्रभावित है। उसका अपना कोई दर्षन नहीं है। अवसरवादिता की भूमिका के कारण वह, राजा महामंत्री, भाषणमंत्री के सूरों में सूर मिलाता है।

6. भाषणमंत्री :–

शुतुरनगर के राजा का एक चाटुकार मंत्री। शुतुरमुर्ग की स्थापना के बीसवी वर्षगॉठ पर वह राजा का अभिनंदन करता है । वह राजा को इस बात पर देष के नाम संदेष प्रसारित करने को कहता है। उसके विचार में विरोधीलाल एक समस्या है। वह राजा और

विरोधीलाल के मिलने का विरोध दर्षाता है। वह राजा को झूठ जानकारी देता है कि शुतुरमुर्ग का निम्रण कार्य पूरा हुआ है।

राजा के लिए जब विरोधीलाल गाली गलौज करता है तो भाषणमंत्री उसे टोकता है। मामूलीराम के संदर्भ में वह राजा के सूर में सूर मिलाता है। शुतुरनगरी पर बाहय आक्रमण की भाषणमंत्री घोषणा करता है। वह युदधोन्माद खडा करता है। शुतुरनगरी में पर्याप्त खाद्य सामग्री बारे में झूठा बयान करता है। भाषणमंत्री राजा का समर्थक है।

7. रानी :–

रानी शुतुरमुर्गी शासनतंत्र के अंग बने अयोग्य अधिकारीयों की प्रतीक है। रानी की भूमिका नाटक में अतिसंक्षिप्त है तो भी उसका सारा क्रियाकलाप हास्यास्पद होते हुए भी वर्तमान जॉच समितियों तथा अयोग्य अधिकारियों पर तीक्ष्ण व्यंग्य बनकर सामने आया है। रानी का चरित्र कलामंत्री के रूप में सबसे अधिक प्रभावषाली है। वह जब भीड के पत्थर द्वारा टूटे दर्पण को लेकर राजा के पास जाती है तो राजा को उसमें शुतुरमुर्ग की आकृति बनी दिखाई पडती है। चारों मंत्री राजा को जब घेर लेते है तब राजा की मनोदषा बिगड जाती है। उस वक्त रानी राजा की मनोदषा से घबरा जाती है और राजा को सॅभालने की कोषिष करती है। वह राजा से एकविष्ठ बनी रहती है।

8. दासी :–

स्त्री पात्रों में रानी की अपेक्षा दासी का चरित्र अधिक सषक्त जीवंत और मार्मिक है। उसकी भूमिका संक्षिप्त होते हुए भी भूख से पीडित व्यक्तियों की काल्पनिक स्थिती का उद्घाटन करती है।

दासी रानी की सेविका है। रानी जब उसे पूछती है कि "उन्होने कभी भूख से मरता हुआ मनुष्य देखा है?" [6] (पृष्ठ 45) उस वक्त दासी भूख की वजह से आदमी किस प्रकार क्षतीग्रस्त होकर मर जाता है आदि का काल्पनिक वर्णन करती है। भूख की समस्या के कारण जनता का आक्रोश चरमसीमा को छू लेता है। दासी को इस स्थिति का पता चल पाता है। किसी बडे उत्पात की आशंका में दासी भयभीत हो जाती है। सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधिक पात्र दासी का चरित्र वास्तविक समस्या के प्रति संकेत करता है।

शुतुरमुर्ग नाटक के पात्रों का चरित्र चित्रण नाटककार ने सहज, स्वाभाविक ढंग से किया है पात्रों के चरित्र चित्रण में प्रसंगानुकूलता और विषयानुकुलता का ध्यान रखा गया है। नाटक का मुख्य उददेष मानत्र–स्वभाव में दूर तक धॅसी शुतुरमुर्गी प्रवृत्ति का परिचय देना है। इस हेतु पात्रों का गठन किया गया है। राजा और महामंत्री, राजा और विरोधीलाल, राजा और मामुलीराम, महामंत्री और रक्षामंत्री, महामंत्री और भाषणमंत्री के बीच के जो संवाद है उससे पात्रों का चरित्र–चित्रण सहजता से हुआ हैं पात्रों के संवादों से एक

दूसरे का चरित्र–चित्रण प्रकट हो गया है। सभी पात्र प्रतिकात्मक एवँ संस्मरणीय है। नाटककार को सभी के चरित्र–चित्रण में सफलता मिली है।

संदर्भ :–

संदर्भ 1. शुतुरमुर्ग – ज्ञानदेव अग्निहोत्री पृष्ठ 4
संदर्भ 2. शुतुरमुर्ग – ज्ञानदेव अग्निहोत्री पृष्ठ 21
संदर्भ 3. शुतुरमुर्ग – ज्ञानदेव अग्निहोत्री पृष्ठ 31
संदर्भ 4. शुतुरमुर्ग – ज्ञानदेव अग्निहोत्री पृष्ठ 67
संदर्भ 5. शुतुरमुर्ग – ज्ञानदेव अग्निहोत्री पृष्ठ 9
संदर्भ 6. शुतुरमुर्ग – ज्ञानदेव अग्निहोत्री पृष्ठ 45

संदर्भ पुस्तके :–

1. शुतुरमुर्ग ज्ञानदेव अग्निहोत्री – भारतीय ज्ञानपीठ– सन 1991
2. ज्ञानदेव अग्निहोत्री के नाटक – जयश्री शुक्ला
3. हिंदी रंगमंच – परिवर्तन और प्रयोगर्मिया – जयदेव तनेजा
4. हिंदी रंगमंत्र – दषा और दिषा – डॉ. जयदेव तनेजा